ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 110-111

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण

डॉ0 विनोद कुमार मिश्र
सह आचार्य– समाजशास्त्र विभाग, जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0), भारत

Received-22.04.2023, Revised-28.04.2023, Accepted-02.05.2023 E-mail: pkmishrajrhu1@gmail.com

सारांशः आज मानव अपनी ही जनसंख्या बढ़ाकर आत्मविनाश और दुःख को आमन्त्रण दे रहा है। बढ़ती जनसंख्या के भरण–पोषण, वस्त्र एवं आवास प्राप्ति के प्रयास, लाभकारी रोजगार के अवसरो की चाहत, भौतिक सुख–सुविधाओं की लालसा, गाँवों से नगरो की ओर प्रवास, बढ़ता औद्यौगीकरण, नगरीकरण आदि से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। संसाधनों पर अत्यधिक दबाव बढ़ने से उनके स्वाभाविक गुणों में ह्रास अवश्यम्भावी हो जाता है। भारत की बढ़ती जनसंख्या पर्यावरणीय अपघटन का कारण बन रहा है। जिसका अध्ययन एवं विश्लेषण समीचीन होगा।

कुंजीभूत शब्द– पर्यावरण, पारिस्थितिकी, औद्यौगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या, आत्मविनाश, भरण–पोशण, रोजगार, अपघटन।

मानव ने अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक उनेक विकास और समृद्धि के सोपान चढ़े–उतरे हैं।, जीवित रहने से लेकर शारीरिक–बौद्धिक विकास करने तक मानव ने पर्यावरण का सहारा लिया है। इस सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया में मानव अपने लिए सुख–सुविधा और धन सम्पत्ति जुटाने के चक्कर में पर्यावरण के सभी घटकों को क्षति पहुँचा रहा है। सामाजिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो मानव का स्वार्थपरक चरित्र, कमजोर मानवीय संवेदनाएँ कमजोर हुई है, स्वार्थ और धनलोलुपता बढ़ी है।

यदि आज हम अपने चारो ओर के वातावरण के सन्दर्भ में विचार करें तो पायेंगे कि प्रकृति अपना क्रोध प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया है। परिणाम सामने है– जल प्रदुषित है, पी नहीं सकते। वायु प्रदूषित है, श्वास नहीं ले सकते । मिट्टी प्रदूषित है जो कुछ उत्पन्न कर रहे हैं वह स्वास्थ्य के दृष्टि से अनुकूल नहीं है, फिर भी विकास जारी है। पर्यावरण मर रहा है। मानव और पर्यावरण के बीच जो सन्तुलन होना चाहिए, उसे हम किसी भी स्तर पर स्थिर नहीं कर पा रहे हैं। अधिकांशतः लोगों में यह भावना हावी हो रही है कि "मै जीवित हूँ, अत्यधिक सुख–सुविधाओं का उपयोग करू, मेरी सुख–समृद्धि बढ़े।" हम यह भूलते जा रहे हैं कि भावी पीढ़ी के लिए क्या प्राकृतिक संसाधन उपयोग करने योग्य बचेगी?[1] आज सबसे बड़ा संकट ग्रीन हाउस प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। वायुमण्डल में कार्बनडाई आक्साइड, मेथेन, क्लोरे–लोरो कार्बन (सी. एफ. सी) आदि गैसे उत्पन्न हो रही हैं। ये गैस पृथ्वी द्वारा अवशोषित सूर्य उष्मा के पुनः विकिरण के समय उष्मा का बहुत बढ़ा भाग स्वयं शोषित करके पुनः भू–सतह को वापस कर देती है जिससे पृथ्वी के निचले सतह पर अतिरिक्त उष्मा जमाव के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। तापक्रम के लगातार बढ़ जाने के कारण आर्कटिक समुद्र और अंटार्कटिका महाद्विप के विषाल हिमखण्डो के पिघलने के कारण समुद्र के जलस्तर में वृद्धि हो रही है जिससे समुद्र तटो से घिरे कई राष्ट्रों के अस्तित्व को संकट उत्पन्न हो गया है। हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार आज से पचास वर्ष के बाद मालदीव देश समुद्र में डूब जायेगा। भारत के समुद्रीतटीय क्षेत्रों के सम्बन्ध में भी ऐसी ही आशंका व्यक्त की जा रही है।[2]

इस भू–मण्डल पर जड़ और चेतन का अपना एक संसार है इन सबका आपस में सन्तुलन बना हुआ है। जहाँ कहीं भी यह संतुलन विद्यमान है, वहाँ प्रकृति प्रदत्त वरदान से जीव–जन्तु एवं मानव समुदाय लाभान्वित होता है जिस किसी स्थान पर यह सन्तुलन बिगड़ता है वहाँ प्रकृति अपना श्राप जैसे– जहरीला वातावरण, मृदा अपरदन, अनियन्त्रित वर्शा, सूखा या बाढ़ तपते रेगिस्तान, आदि के रूप में देखने को मिल रहा है। इन सभी समस्याओं तथा पर्यावरणीय असन्तुलन का जिम्मेदार आज का विकसित व स्वार्थलोलुप मानव समाज ही है। जनसंख्या एक प्रकार क जीवों का एक समूह होता है जो एक निश्चित स्थान पर एक समय में पाया जाता है। प्रत्येक जीव वह चाहे मनुष्य हो, पशु–पक्षी हो या वनस्पति हो, सभी की एक संख्या होती है जो पारिस्थितिकीय चक्रो के साथ–साथ उसे प्रभावित भी करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनसंख्या का तात्पर्य मानव जनसंख्या से है जिसने विभिन्न प्रणालियों में व्यवधान पैदा कर उसे संकटग्रस्त कर दिया है।

मानव जनसंख्या की सीधा सम्बन्ध पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तन्त्रों से है। उनकी वृद्धि एवं निवास पर्यावरणीय पारिस्थितिकी पर निर्भर है। समस्त जीव विभिन्न पर्यावरण में जीवित रहने तथा जीवन निर्वाह के लिए अनुकूलित होते है। वस्तुतः किसी भी जीव जाति का अलग रहना संभव नहीं है और वे एक विशेष प्रकार के पर्यावरणीय एवं प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न स्थान पर निवास करने लगते है, जिससे वहाँ एक जनसंख्या का निर्माण हो जाता है। जनसंख्या को प्रति इकाई भू–क्षेत्र में निवास करने वाले मनुष्यो की संख्या द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। विश्व में जनसंख्या का औसत घनत्व 36 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। हमारे देश की जनसंख्या रूस और अमेरिका से लगभग तीन गुना ब्रिटेन व फ्रान्स से तेरह गुना और आस्ट्रेलिया से सत्तर गुना अधिक है। जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि व वन घट रहे हैं तथा प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। भारत की जनसंख्या 1951 में 36.1 करोड़ थी जो सत्तर वर्ष बाद बढ़कर चार गुना हो गयी। जबकि 1952 में दुनिया का पहला परिवार नियोजन कार्यक्रम भारत में आरम्भ किया गया, उसके बाद भी 1961 में भारत की आबादी 44 करोड़ हो गयी। वर्ष 1966 में भारत के नागरिकों को परिवार नियोजन के लिए गर्भ निरोधक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए हिन्दुस्तान लैटेक्स लिमिटेड नामक एक पीएसयू की स्थापना की गई। इसके बावजूद 1971 की जनगणना में देश की आबादी बढ़कर लगभग 55 करोड़ हो गयी।[3] अभी तक परिवार नियोजन हमारे संविधान का अंग नहीं था। वर्ष 1976 में संविधान के 42वें संशोधन द्वारा संविधान की सातवीं अनुसूची में वर्णित समवर्ती सूची में जनसंख्या नियन्त्रण और परिवार नियोजन को जोड़ा गया। जनसंख्या नियन्त्रण के लिए वृहद स्तर पर लक्ष्य आधारित नसबन्दी कार्यक्रम भी चलाए गये। इन प्रयासों के बाद भी 1981 मं जनगणना बढ़कर 68 करोड़

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

हो गई।

जनसंख्या नियन्त्रण के उद्देश्य से 1983 में देश का पहला निजी निधेयक संसद में प्रस्तुत किया गया नेशनल हेल्थ पालिसी 1983 में बताया गया कि कुल प्रजनन दर (टी. एफ. आर) में गिरावट की वर्तमान दर से भारत वर्श 2000 में प्रतिस्थापन स्तर यानी 2. 1 टी. एफ. आर. को प्राप्त कर लेगा, जबकि वर्तमान राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे–5 के अनुसार देश ने उस दर को 2022 में प्राप्त किया।[4] यह सिद्ध होता है कि जनसंख्या दर कम होने का जो अनुमान था वह उस दर से कम नहीं हुआ। भारत की बढ़ती जनसंख्या की चिन्ता के बाद भी 1991 में 85 करोड़ 2001 में 102 करोड़ और 2011 में 121 करोड़ हो गई। कोविड के कारण 2021 की जनगणना नहीं हो सकी जिससे वर्तमान आँकड़ों के बारे में सही नहीं बताया जा सकता, लेकिन हाल ही में संयुक्तराष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के अनुसार भारत ने जनसंख्या में चीन को पीछे छोड़कर विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है।

जनसंख्या विस्फोट– (Population explosion) विश्व की मानव जनसंख्या में लगभग 2 लाख प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। अनुमान है कि विश्व जनसंख्या की यह दर सन् 2024 तक दोगुनी अर्थात 12 विलियन तक विकासशील देशों में होगी। वर्तमान वैश्विक जनसंख्या वृद्धि दर 1.4 प्रतिशत है, जबकि यह विकासशील देशों मं 1.7 प्रतिशत है, क्योंकि अधिकांश विकसित राष्ट्रों में जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक है। तीसरी दुनिया के देशो में जनसंख्या वृद्धि दर लगभग 2 प्रतिशत है। जनसंख्या घनत्व एशिया में सबसे अधिक 108 व्यक्ति प्रति वर्ग किसी से अधिक है जबकि लैटिन अमेरिक में यह घनत्व 23, अफ्रीका में 24 तथा उत्तरी अमेरिका में 14 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी है।[5]

आधुनिक चिकित्सा सुविधओं ने मृत्यु दर को उस स्तर तक घटा दिया है जिस पर पहले की अपेक्षा और अधिक लोग लम्बा जीवनयापन करने लगे हैं। आज विकसित राष्ट्रों में 65 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों की संख्या का अनुपात जो सन् 1950 में 7.9 प्रतिशत थी, बढ़कर 13.5 प्रतिशत हो गई है।[6]

जनसंख्या एव स्वास्थ्य– जीवन के हर क्षेत्र में मानवीय क्रिया–कलापों से पर्यावरण में जो परिवर्तन आए है, उन्होंने मानव स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। आर्थिक समृद्धि बढ़ता नगरीकरण, औद्यौगीकरण से सर्वाधिक प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है। नगरों में मलीनवस्ती में वृद्धि, जल निकासी की समस्या, कचरो का ढ़ेर एवं उनके निस्तारण की समस्या, यातायात व्यवस्था से बढ़ता प्रदूषण– दमा व श्वास रोग का कारण बन रहा है। साथ ही जीवाणुओं की वृद्धि, रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी, बहुत से दवाओं के साइड इफेक्ट स्वयं बीमारी बनती जा रही है। आधुनिक विकास प्रक्रिया ने अनेक दीर्घकालीन समस्याऐं उत्पन्न की है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाऐं औसत आयु में वृद्धि अवश्य की है। किन्तु बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरणीय समस्याऐं भी बढ़ती जा रही है। समाज में स्वास्थ्य की बेहतर स्थिति से जीवन शैली बेहतर तभी बनेगी जब जनसंख्या वृद्धि में भी स्थिरता आयेगी।

निष्कर्ष– पर्यावरण अनेक प्रकार से हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। मानव स्वास्थ्य पर्याप्त मात्रा में अच्छा भोजन, स्वच्छ पेयजल और सुरक्षित आवास पर निर्भर है। तूफान, चक्रवात, सूखा, बाढ़ अत्यधिक गरमी व ठण्डी इत्यादि प्राकृतिक आपदाये जनमानस को भारी क्षति पहुँचाती है। जलवायु के उतार–चढ़ाव और परिवर्तनों के पीछे बढ़ती आवादी का असन्तुलित प्राकृतिक दोहन है। मानव जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हमारे पर्यावरण पर एक अविश्वसनीय दबाव डाल रही है, विकसित राष्ट्र पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं उनकी औद्यौगिक प्रगति प्रतिस्पर्धा के दौर में वैश्विक पर्यावरण को प्रभावित कर रहे हैं, जो पृथ्वी पर स्थायी जीवन के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। ईंधन और ऊर्जा के अनियन्त्रित उपयोग, औद्यौगिक प्रगति, भूमि और मिट्टी का क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन इन सब गम्भीर समस्याओं क लिए पर्यावरण मानको का कड़ाई से पालन हो। चिंतन करने की आवश्यकता है कि जनसंख्या नियन्त्रण के विषय में विश्व में सबसे पहले योजना लागू करने वाला देश भारत आज दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन चुका है। हम आजादी के 75 वर्षो बाद आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, फिर प्रश्न उठता है कि हम कब स्थिर जनसंख्या एवं स्वच्छ पर्यावरण का महोत्सव मनायेंगे? विकास की जिन योजनाओं में पर्यावरण सुरक्षा के उपाय शामिल नहीं है उन पर रोक लगना चाहिए। स्वास्थ्य को संरक्षित रखने वाली विकास योजनाओं को बढ़ावा मिले। इस प्रकार पर्यावरण का स्वास्थ्य और मानव का स्वास्थ्य बना रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्रा, जय प्रकाश – जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा 2016 पृ. 333.
2. सिंह अजय व सुरेन्द्र – पर्यावरण एवं समाज, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 पृ. 85, 86.
3. गौड़, मनु : बढ़ती जनसंख्या से मिले आजादी, लेख, दैनिक जागरण, 21 अप्रैल 2023 पृ. सख्या 8.
4. इण्टरनेट से प्राप्त आँकड़े।
5. पापुलेशन रेफरेशन ब्यूरो इन्का, वाशिंगटन डीसी उद्धृत त्रिपाठी, दयाशंकर, पर्यावरण विज्ञान के विविध आयाम, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ. 169.
6. त्रिपाठी, दयाशंकर – पर्यावरण विज्ञान के विविध आयाय, हिन्दी प्रकाशन समिति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ. 168.

*****